www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाषायी विस्तार

इस वर्ष का एक अति महत्वपूर्ण निर्धारण

—ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI KAILASH MAHAJAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाषायी विस्तार, इस वर्ष का

एक अति महत्वपूर्ण निर्धारण

पारस्परिक आदान-प्रदान और विचार विनिमय के द्वारा ही मानवी प्रगति संभव हुई है और सहकार की गाड़ी चल रही है। इस प्रयोजन में भाषा का प्रयोग होता है। मौखिक वार्तालाप में भी और प्रचार, साहित्य आदि द्वारा भी। इन सभी का संयुक्त स्वरूप भाषा होता है। वाणी और लेखनी के माध्यम से यह अभिव्यक्तियाँ प्रकट होती और एक से अनेकों तक पहुँचाती रहती है। भाषा न हो तो मनुष्य को भी अन्य प्राणियों की तरह गूँगा-बहरा रहना पड़े। फलतः पिछड़ेपन से किसी भी प्रकार छुटकारा न मिले। जब तक भाषा का अविर्भाव नहीं था तब तक मनुष्य को भी नर वानर वर्ग में रहना पड़ा।

भाषा की एक सीमा है जिसमें मनुष्यों के बीच परस्पर विचार विनिमय चलता है। इस सीमा से बाहर होते हीं फिर गूँगे-बहरे जैसी स्थिति बन जाती है। एक व्यक्ति बङ्गला दूसरा तेलगु बोले तो अपने-अपने ढंग के शब्दोच्चार करते रहने पर भी उनका अर्थ न समझ पाने के कारण विज्ञ विद्वान होते हुए भी गूँगे बहरे की स्थिति में रहेंगे और इशारों से जितना काम चल सकेगा उतना चलायेंगे। ज्ञान संवर्धन एवम् विचार प्रचार की दृष्टि से भाषा संबन्धी यह सीमा बन्धन भारी अवरोध उत्पन्न करता है।

धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण का प्रयोजन अभी प्रधानतया हिन्दू धर्मावलम्बियों तक ही पूरा हुआ कहाजा सकता है। मिशन के सूत्र संचालक इसी वर्ग में पैदा हुए और सम्पर्क क्षेत्र से कार्य आरम्भ करने की स्वाभाविकता के अनुरूप कदम बढ़ाए। पर पांच सौ करोड़ मनुष्यों तक इस सीमा में रहकर पहुँचा नहीं जा सकता। हिन्दू संसार भर में चालीस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करोड़ से भी कम हैं जबकि आबादी ५०० करोड़। इसाई १२० करोड़, मुसलमान ८० करोड़ हैं। बौद्ध धर्म अब हिन्दू धर्म से पीछे चला गया। फिर भी कुल मिलाकर ससार भर में प्राय: ६० प्रमुख धर्म हैं। जनमानस पर धर्मतन्त्र के प्रभाव को देखते हुए उन सभी क्षेत्रों में युग चिंतन को पहुँचाना पड़ेगा। इसके लिए आवश्यक है कि उन्हीं धर्मों के लोग अपने-अपने शास्त्रों और परम्पराओं का उल्लेख करते हुए वे बातें कहें जो समय की आवश्यकता की पूर्ति करती है, विलगाव घटाती और एकता, समता, सहकारिता, शालीनता जैसी सत्प्रवृत्तियों की मनोभूमि विकसित करती है। बुद्ध काल में धर्म-चक्र प्रवर्तन के लिए नालन्दा विश्वविद्यालय में भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं और तक्षशिला विश्व-विद्यालय में संस्कृतियाँ। उन दिनों सम्प्रदायों का वर्तमान विलगाववादी, विग्रही एवं असहिष्णु स्वरूप नहीं था। मात्र क्षेत्रीय संस्कृतियाँ प्रचलित थीं, धर्मप्रचारकों को अपनी बात जन-साधारण के गले उतारने के लिए क्षेत्रीय संस्कृतियों का स्वरूप भी पढ़ना-समझना पड़ता था। अस्तु उसका प्रबन्ध हर्षवर्धन के सहयोग से तक्षशिला में हुआ था। युग परिवर्तन अभियान के संदर्भ में इन दिनों भाषाओं और धर्मों का अध्ययन- अध्यापन आवश्यक समझा गया। प्रज्ञा प्रचारकों के बढ़ते हुए कार्यक्षेत्र को देखते हुए इन दोनों प्रयासों को कार्यान्वित किया जाना आवश्यक समझा गया। शांतिकुञ्ज में उसकी व्यवस्था बनाई गई है। इसी हेतु नई इमारत बनी है और वह सारा ढांचा खड़ा किया गया है जिसके सहारे मिशन की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, मिशन को भाषाओं और धर्मों सम्बन्धी अड़चनों के कारण एक छोटे समुदाय या क्षेत्र तक सीमित होकर न रहना पड़े।

वसन्त पर्व से इस शुभारम्भ का उद्घाटन हुआ। इमारत बनाने के साथ-साथ वे सभी साधन जुटाए, ग्रन्थ मंगाए, अध्यापक और छात्र बुला जा रहे हैं जो निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकें।

इस नई व्यवस्था का तात्पर्य है मिशन के कार्य क्षेत्र का कई गुना विस्तार। जन जागरण के दो ही प्रधान माध्यम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं—लेखनी और वाणी। स्वाध्याय और सत्सङ्ग। लेखनी से साहित्य सृजा जाता है और उससे स्वाध्याय की आवश्यकता पूरी होती है। भाषायी क्षेत्रों में प्रवेश करते हुए तत्काल अन्य भाषाओं में साहित्य सृजन की आवश्यकता पड़ेगी। उसके दो पक्ष हैं-एक लेखन, दूसरा मुद्रण। इन दोनों कार्यों के लिए ताना-बाना अभी से बुना जा रहा है। हिन्दी से जो लोग अँग्रेजी, गुजराती, मराठी, बंगाली, पंजाबी, उड़िया, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़ आदि भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्य कर सकें ऐसे प्रज्ञा परिजनों को शांति-कुञ्ज आकर बस जाने के लिए कहा जा रहा है। यह कार्य घरों में रहकर उतनी अच्छी तरह नहीं हो सकता क्योंकि अनुवाद कर्त्ताओं को बीच-बीच में परामर्श करते रहने की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बिना उत्तरदायित्व का निर्वाह ठीक प्रकार बन नहीं पड़ेगा।

भाषायी क्षेत्रों में प्रवेश करते हुए उनका साहित्य निर्माण करने की तरह ही सत्सङ्ग की प्रचार, प्रवचन, परामर्श की आवश्यकता पड़ेगी। अन्यथा मात्र साहित्य छाप लेने भर से क्या बनेगा। इस सामिग्री को पुस्तक विक्रेता तो मोटा मुनाफा न मिलने के कारण बेचते नहीं। प्रज्ञा साहित्य को व्यापक बनाने में प्रचारकों प्रवचनकर्त्ताओं की ही प्रमुख भूमिका होती है। कार्यक्षेत्र बढ़ेगा तो शाखा सङ्गठनों और प्रज्ञा-संस्थानों का भी विस्तार होगा। उनके वार्षिक अधिवेशन एवं छोटे-बड़े आयोजन समारोह भी होते रहेंगे। इसके लिए प्रचारक कार्यकर्ताओं की नयी भर्ती का नया दौर चलेगा। वक्ता और गायकों की सङ्गठनों और संचालकों की आवश्यकता अब की अपेक्षा कई गुनी होनी स्वाभाविक है। अन्यथा इतनी भाषाओं के क्षेत्र में काम कौन करेगा? और बिना प्रत्यक्ष कार्यक्रम के मिशन आगे कैसे बढ़ेगा? मात्र प्रकाशित साहित्य ही तो वातावरण बनाने और जन-जागरण की आवश्यकता पूरी करने का कार्य कर नहीं लेगा।

अनुमान है कि जितनी भाषाओं और धर्मों के क्षेत्रों में प्रज्ञा अभियान का विस्तार होना है उसके लिए आज की तुलना में कम से कम तीन गुने कार्यकर्ताओं की तत्काल बढ़ोतरी करनी होगी। देश में १४

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं। धर्म-सम्प्रदायों की गणना हम संस्कृतियों की भिन्नता के आधार पर करते हैं। संस्कृति से तात्पर्य है दार्शनिक मान्यताओं और प्रथा प्रचलनों के बीच पाए जाने वाला असाधारण अन्तर। इस प्रकार वे भी न्यूनतम १४ हो जाते हैं। आदिवासियों और यायावर लुहारों को यों हिन्दू लिखा जाता है पर उनकी संस्कृतियों में असाधारण अन्तर रहने से सम्पर्क साधने वालों को पाए जाने वाले अन्तरों को समझना होगा। विदेशी ईसाई पादरियों को प्रायः पिछड़े क्षेत्रों में धर्म प्रचार के लिए भेजा जाता है। जहाँ उन्हें काम करना है वहाँ की भाषा तथा संस्कृति के भली प्रकार समझने के उपरान्त ही वे वहाँ घनिष्टता स्थापित कर पाते और अभीष्ट प्रयोजनों में सफल होते हैं, यही कार्य अपने लिए भी है।

इस संदर्भ में हिन्दी भाषिओं की भी एक विशेष जिम्मेदारी है कि वे अपनी ओर से कदम बढ़ायें और देश की प्रचलित भाषाओं में से जितना अधिक सम्भव हो सके उतना सीखें। विशेषतया अपने प्रान्त में तथा लगे हुए प्रान्त में बोली जाने वाली भाषाओं को सीखने का तो प्रयत्न करें ही। इससे उनका सम्पर्क क्षेत्र विस्तृत होगा और आदान-प्रदान एवं आत्मभाव का दायरा बढ़ेगा। अन्य भाषा-भाषियों से जिस प्रकार हिन्दी सीखने के लिए कहा जाता है उसी प्रकार यह अनुरोध एवं प्रयत्न भी चलना चाहिए कि हिन्दी भाषी भी देश की अधिकाधिक भाषाएँ सीखने का प्रयत्न करें। दोनों ओर से प्रयत्न चलने पर दूरी कम करने में अधिक सहायता मिलेगी।

अब सम्प्रदायिकता बुरी तरह उभर रही है। कट्टरता और असहिष्णुता का ठिकाना नहीं। धर्म के नाम पर किस प्रकार घृणा और द्वेष के बीज बोये जाते हैं यह किसी से छिपा नहीं है। हमें प्रचलित धर्मों के तत्वदर्शन और प्रवचनों को गंभीरता पूर्वक अध्ययन करना होगा ताकि उन्हीं मान्यताओं का प्रगतिशील ढ़ग से विवेचन करते हुए मतभेदों को एकता की ओर और आग्रह को विवेक की ओर मोड़ सकें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सब धर्मों को एक मंच पर एकत्रित करने और न्यूनतम कार्यक्रम बनाकर साथ-साथ कदम उठाने की योजना का अनेकों ने प्रयोग परीक्षण किया है, वह सफल न हो सकी। अन्य धर्मों को मिटाकर एकमात्र अपना ही धर्म रखने की महत्वाकांक्षा भी बुरी तरह असफल हो गई। दमन और प्रलोभन भी वह कार्य न कर सके इसका इतिहास साक्षी है। अपना प्रयास यह है कि नवयुग अवतरण के समर्थक अपने-अपने समुदाय में काम करें अभ्यस्त धर्म के कथा-पुराणों, शास्त्रों एवं प्रतिपादनों से वे तत्व ढूँढे जो एकता, समता और शुचिता की ओर लोकमानस को धकेलते हों। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी से गुण, कर्म, स्वभाव उभारते हों। चिंतन, चरित्र और व्यवहार में शालीनता और आत्मीयता की अभिवृद्धि करते हों। ऐसे प्रतिपादनों से हर धर्म सम्प्रदाय भरा पड़ा है। ध्यान उन्हीं पर देना है, खोजना उन्हीं को है, प्रचार-प्रसार उन्हीं का करना है।

अपने देश में संस्कृतियाँ धर्मों से भी कहीं अधिक हैं। एक ही क्षेत्र में कितनी ही संस्कृतियों को देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए जन-जातियों के रीति-रिवाज, बोलियाँ और मान्यताएँ एक दूसरे से अत्यधिक भिन्नता लिए देखी जा सकती हैं। पिछड़े समुदायों को ऊँचा उठाने का काम यदि हाथ में लेना है तो प्रचारकों को पहला काम यही करना होगा कि उन समुदायों की भाषाओं तथा संस्कृतियों का अध्ययन करें और इस योग्य बनें कि उन्हीं में घुलमिल कर विचार परिवर्तन का प्रयोजन पूरा कर सकें। सर्वथा अशिक्षित और पिछड़े समुदायों के लिए उनके गले उतर सकने वाला गीत, काव्य रचना होगा। विषय निर्धारित हो पर उनकी भाषा तथा ध्वनि शैली ऐसी होनी चाहिए जिसे उन समुदायों में सरलता पूर्वक अपनाया जा सके। यह साहित्य सृजन भी अपने को ही करना होगा। पुस्तकें न पढ़ सकने की स्थिति में वह कार्य टेप गीतों से हो सकता है। टेप के साथ-साथ गाने का अभ्यास करने पर देश के ७० प्रतिशत अशिक्षित समुदाय को लोक गीतों के रूप में युग चेतना को हृदयगम कराया जा सकना सरल सम्भव हो सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अच्छा होता संसार भर की एक भाषा रहती और लोग उसके माध्यम से विचार-विनिमय करते, भाषाई जंजीरों से छुटकारा पाते। तब विश्वभाषा में छपा साहित्य कुछ ही दिनों में सर्वत्र उपलब्ध होता और सस्ता भी पड़ता। पर आज की स्थिति को क्या कहा जाय जिसमें भाषाओं और संस्कृतियों ने मनुष्य जाति को अगणित जेलखानों में बन्द करके छोटे-छोटे दायरों में कूप मण्डूक की स्थिति अपनाने के लिए बाधित कर दिया है।

जब तक विश्वभाषा और विश्व संस्कृति का सुयोग नहीं आता अब तक दो ही उपाय हैं कि उपभाषाओं और उप संस्कृतियों का यथा संभव केन्द्रीकरण किया जाय। दूसरा उपाय यह है कि जिन्हें महत्त्वपूर्ण प्रयोजनों के लिए जन सम्पर्क करना है वे अपने-अपने कार्य क्षेत्र की भाषाओं और उपभाषाओं, संस्कृतियों और उपसंस्कृतियों की जानकारी प्राप्त करके उन क्षेत्रों में प्रवेश करें। वर्तमान परिस्थितियों में तात्कालिक प्रयोजन इसी प्रकार से सधता है। दूसरों ने भी वह बन्द द्वार इसी प्रकार खोला है। ईसाई मिशन ने बाइबिल संसार भर की ६०० भाषाओं में छापी है। कम्युनिस्ट साहित्य भी इसी प्रकार छपा है। प्रचारकों ने भाषाओं और संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त करके उनके साथ अपने उद्देश्य का तालमेल बिठाया है। अब तलवार की नोक पर या लालच देकर जन-साधारण को अपनी बात से सहमत नहीं कराया जा सकता। अब समर्थ प्रचार तंत्र ही विचार परिवर्तन का एक मात्र सफल उपाय रह गया है।

भारत की तीन चौथाई जनता अशिक्षित है और देहातों में रहती है। थोड़ी-थोड़ी दूर पर उनकी भाषाएँ और उपसंस्कृतियाँ बदल जाती हैं। इस कठिनाई को देखते हुए यह और भी अधिक आवश्यक हो गया है कि देश के कोने-कोने में युगचेतना पहुँचाने के लिए भाषाओं और संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त हो। तदनुरूप साहित्य रचा जाय। वक्ताओं और गायकों की इस प्रकार इतनी बड़ी संख्या प्रशिक्षित की जाय कि वे बिखरे हुए जनसमुदाय के चिंतन क्षेत्र में प्रवेश पा सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन सभी प्रयोजनों के लिए लगनशील सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी। प्रज्ञा परिवार के विस्तार को देखते हुए उसकी पूर्ति की आशा की जा सकती है। अपने ही लोगों में से इतने कर्मवीर निकल सकते हैं जो समय की माँग पूरी करते हुए युगशिल्पी की शानदार भूमिका निभा सकें। बड़ी अपेक्षाएँ भी सामान्यतया उसी संस्था से की जाती है जो समर्थ हो, जिसका कार्यक्षेत्र विशाल हो। मिशन ने गत बारह वर्ष में प्रगति के कदम बढ़ाते हुए जैसे-जैसे अपना कार्य क्षेत्र बढ़ाया है, अब सभी की दृष्टि इस ओर ही केन्द्रित है। यह कहना भी अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि भाषा एवं धर्म विस्तार संबन्धी प्रस्तुत निर्धारण की गरिमा एवं फलश्रुतियाँ उतनी ही विशाल होंगी जैसी कि प्रज्ञा संस्थानों के निर्माण, विज्ञान-अध्यात्म के समवन्त हेतु शोध संस्थान की स्थापना एवं यज्ञोपैथी एकौषधि विज्ञान के अनुसन्धानके शुभारम्भ के समय विचारी गयीं। जैसे जैसे अन्य प्रवत्तियों ने विकसित होकर विराट स्वरूप की एक झलक झांकी भर जन मानस को दिखायी है, वैसी ही कुछ अपेक्षा धर्म-भाषा सम्बन्धी इस विश्व विद्यालय के निर्माण से भी की जा सकती है।

विद्यालय की इमारत अभी तो थोड़े साधनों के अनुरूप छोटी ही बन सकी है। पर समयानुसार कार्यविस्तार के अनुरूप उसका भी विस्तार हो जाएगा—ऐसी आशा करनी चाहिए। भाषायी साहित्य-सृजन तथा प्रकाशन यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है। अन्यान्य भाषाओं की पत्र पत्रिकाओं में मिशन की विचारधारा के लेख भेजना यह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसके लिए टाइपराइटरों की तथा अन्यान्य साधनों की आवश्यकता पड़ेगी। आशा की जानी चाहिए कि जिस महाशक्ति ने इस वसन्त पर्व से इस कार्य-विस्तार का उत्तरदायित्व कंधों पर डाला है वह उसके लिए व्यक्तियों तथा साधनों की व्यवस्था भी करेगी। समय ने अपनी माँग पूरी करने के लिए जो ताना-बाना बुना है उसे साधन सरंजाम के अभाव में अपूर्ण अस-फल नहीं रहना पड़ेगा ऐसा विश्वास हममें से प्रत्येक को होना चाहिए।

प्रका० मुद्रक-युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार मू०—४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org